नरेश कुमार अनजान

दिलकश ग़ज़लें

दिलकश ग़ज़लें

मैं प्यार खोजता फिरता था
मानव की आंखों में, दिल में,
जो आंख मिली पत्थर की मिली,
जो दिल पाया पत्थर पाया।

कविता-शायरी की सर्वश्रेष्ठ पुस्तकें

- ✔ रंगारंग हास्य कविसम्मेलन
- ✔ रंगारंग मुशायरा
- ✔ हंसीले-कटीले व्यंग्य
- ✔ चुनींदा शे'र
- ✔ मयख़ाना

देश-भर के रेलवे, रोडवेज़ तथा अन्य प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध हैं। अपनी मनपसंद पुस्तकों की किसी भी नज़दीकी बुक स्टॉल से मांग करें। यदि न मिलें, तो हमें पत्र लिखें। हम आपको तुरंत वी.पी.पी. द्वारा भेज देंगे। पुस्तक महल की पुस्तकों की निरंतर जानकारी पाने के लिए विस्तृत सूची-पत्र मंगवाएं या हमारी वेबसाइट देखें www.vspublishers.com

दिलकश ग़ज़लें

नरेश कुमार अनजान

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

प्रकाशक

वी एण्ड एस पब्लिशर्स

F-2/16, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
☎ 23240026, 23240027 • *फैक्स:* 011-23240028
E-mail: info@vspublishers.com • *Website:* www.vspublishers.com

शाखा: हैदराबाद

5-1-707/1, ब्रिज भवन (सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया लेन के पास)
बैंक स्ट्रीट, कोटी, हैदराबाद - 500 095
☎ 040-24737290
E-mail: vspublishershyd@gmail.com

शाखा : मुम्बई

जयवंत इंडस्ट्रिअल इस्टेट, 1st फ्लोर-108, तारदेव रोड
अपोजिट सोबो सेन्ट्रल, मुम्बई - 400 034
☎ 022-23510736
E-mail: vspublishersmum@gmail.com

फ़ॉलो करें:

© **कॉपीराइट:** वी एण्ड एस पब्लिशर्स

ISBN 978-93-521506-6-3

DISCLAIMER

इस पुस्तक में सटीक समय पर जानकारी उपलब्ध कराने का हर संभव प्रयास किया गया है। पुस्तक में संभावित त्रुटियों के लिए लेखक और प्रकाशक किसी भी प्रकार से जिम्मेदार नहीं होंगे। पुस्तक में प्रदान की गयी पाठ्य सामग्रियों की व्यापकता या सम्पूर्णता के लिए लेखक या प्रकाशक किसी प्रकार की वारंटी नहीं देते हैं।

पुस्तक में प्रदान की गयी सभी सामग्रियों को व्यावसायिक मार्गदर्शन के तहत सरल बनाया गया है। किसी भी प्रकार के उद्धरण या अतिरिक्त जानकारी के स्रोत के रूप में किसी संगठन या वेबसाइट के उल्लेखों का लेखक या प्रकाशक समर्थन नहीं करता है। यह भी संभव है कि पुस्तक के प्रकाशन के दौरान उद्धृत बेवसाइट हटा दी गयी हो।

इस पुस्तक में उल्लिखित विशेषज्ञ के राय का उपयोग करने का परिणाम लेखक और प्रकाशक के नियंत्रण से हटकर पाठक की परिस्थितियों और कारकों पर पूरी तरह निर्भर करेगा।

पुस्तक में दिये गये विचारों को आजमाने से पूर्व किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना आवश्यक है। पाठक पुस्तक को पढ़ने से उत्पन्न कारकों के लिए पाठक स्वयं पूर्ण रूप से जिम्मेदार समझा जायेगा।

उचित मार्गदर्शन के लिए पुस्तक को माता-पिता एवं अभिभावक की निगरानी में पढ़ने की सलाह दी जाती है। इस पुस्तक के खरीददार स्वयं इसमें दिये गये सामग्रियों और जानकारी के उपयोग के लिए सम्पूर्ण जिम्मेदारी स्वीकार करते हैं। इस पुस्तक की सम्पूर्ण सामग्री का कॉपीराइट लेखक/प्रकाशक के पास रहेगा। कवर डिजाइन, टेक्स्ट या चित्रों का किसी भी प्रकार का उल्लंघन किसी इकाई द्वारा किसी भी रूप में कानूनी कार्रवाई को आमंत्रित करेगा और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार समझा जायेगा।

प्राक्कथन

ग़ज़ल उर्दू की मुक्तक काव्य-शैली का एक विशेष रूप है। उर्दू मुक्तक काव्य में ग़ज़ल का सर्वोपरि स्थान है। मुक्तक काव्य की अपनी एक विशेषता है। उसकी प्रत्येक इकाई अपने आप में पूर्ण और स्वतन्त्र होती है। इसलिए उनका क्रम यानी स्थान बदलने से उनका अस्तित्व ज्यों-का-त्यों बना रहता है, उसमें कोई बदलाव नहीं आता। यही कारण है कि ग़ज़लों का क्रम आसानी से बदला जा सकता है उसे बदलने में किसी प्रकार की कोई कठिनाई नहीं आती है। यह तो रही ग़ज़लों के क्रम बदलने की बात, अब ग़ज़लों में कहे शेरों को बदलने की बात लो। इनको बदलने से इनका अस्तित्व भी ज्यों-का-त्यों बना रहता है उस में किसी प्रकार का कोई अंतर नहीं आता। सिर्फ मतला और मक्ता (पहला और अंतिम शेर) छोड़कर। मतले-

दिले-नादां! तुझे हुआ क्या है?
आख़िर इस दर्द की दवा क्या है?

की दोनों पंक्तियों का रदीफ़-काफ़िया (स्वर-तुक) मिलता है और काफ़िये-

हमने माना के कुछ नहीं ग़ालिब,
मुफ़्त हाथ आये तो बुरा क्या है?

में शायर का नाम होता है, इसलिए इनका स्थान नहीं बदला जा सकता। इनका स्थान बदलने से ग़ज़ल का रूप बिगड़ जाता है। ग़ज़ल में मतला-मक्ता छोड़कर अन्य सभी शेर होते हैं।

हम को उनसे वफ़ा की है उम्मीद
जो नहीं जानते वफ़ा क्या है?
जान तुम पर निसार करता हूं
मैं नहीं जानता दुआ क्या है?

शेर की प्रथम पंक्ति में शायर जो बात कहना चाहता है उसका संकेत देता है जिससे श्रोता उस बात के प्रति सजग हो जाते हैं, और दूसरी पंक्ति में शायर अपनी बात को इस नज़ाकत से कहता है कि श्रोता उसकी मस्ती में झूमने लगते हैं। इस कला में जो शायर जितना निपुण होता है वह उतना ही सफल और श्रेष्ठ फनकार (कलाकार) होता है। यही है उर्दू ग़ज़ल का कमाल।

आज के हिन्दी कवियों ने भी ग़ज़ल को अपनाया है। मैंने भी हिन्दी में कुछ ग़ज़लें लिखी हैं जो इस संकलन में संकलित हैं। इसके अलावा मैंने अपने स्वर्गीय बड़े भाई श्री मोहन लाल मौज की ग़ज़लें भी इसमें शामिल की हैं। वे केवल मेरे बड़े भाई ही नहीं, गुरु भी थे और साथ ही एक नेक इनसान भी।

प्रस्तुत पुस्तक में संकलित ग़ज़लों और रुबाइयों के बारे में मैं कुछ नहीं कहूंगा। वे कैसी हैं पाठकगण पढ़कर ख़ुद ही जान लेंगे।

–लेखक

1

ग़ज़ल

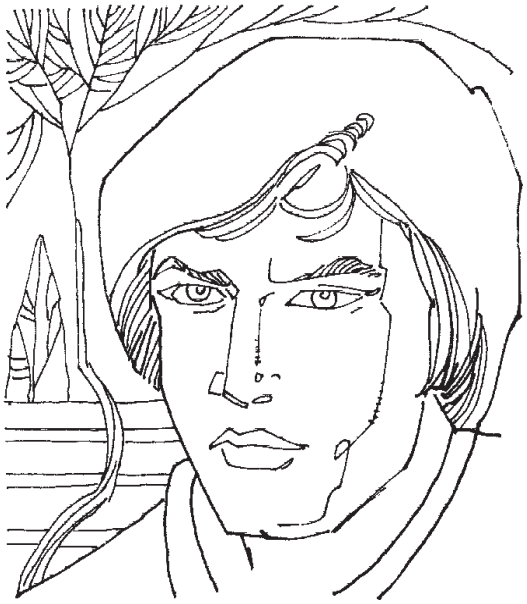

विरोधी हर हवा है और मैं हूं।
उमड़ती ग़म घटा है और मैं हूं।

उधर दुख-दर्द है संसार भर का,
इधर साकी सुरा है और मैं हूं।

उधर है तू व तेरी बेवफ़ाई,
इधर मेरी वफ़ा है और मैं हूं।

निभाएं गगन वाले आप अपनी,
मेरी प्यारी धरा है और मैं हूं।

उधर आलोचना आलोचकों की,
इधर मेरी कला है और मैं हूं।

2

ग़ज़ल

और थोड़ा करीब हो जाता।
प्यार तेरा नसीब हो जाता।

रंग तेरा अजीब जब देखूं,
रंग मेरा अजीब हो जाता।

प्यार तेरा अगर मुझे मिलता,
मैं बड़ा ख़ुशनसीब हो जाता।

जानता ग़र ग़रीब प्यारे हैं,
मैं कसम से ग़रीब हो जाता।

फूल अनजान एक डाली के,
क्यों अलग है नसीब हो जाता।

3

ग़ज़ल

क्या धरा, सूर्य, चांद, तारे हैं।
वक्त के ये गुलाम सारे हैं।

देने वाला ज़रूर देवेगा,
हाथ बेकार क्यों पसारे हैं।

सुख बुलाए मगर नहीं आए,
ग़म बुलाए बिना पधारे हैं।

क्या कहा, एक बार फिर कहना,
हम किसी के नहीं, तुम्हारे हैं।

हम न अनजान भूल पाएंगे,
साथ तेरे जो दिन गुज़ारे हैं।